GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

नेहरू युग बनाम वाजपेयी युग : एक तुलनात्मक अध्ययन

दीप सिंह तोमर (रिसर्च स्कॉलर)
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, म.प्र.
deepsinghtomar19@gmail.com , संपर्क सूत्र : 9826243223

सारांश

नेहरू युग राष्ट्र निर्माण की आधारशिला का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि वाजपेयी युग एक परिपक्व लोकतंत्र की विकास यात्रा को दर्शाता है। जहाँ नेहरू ने नवस्वतंत्र राष्ट्र को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और कूटनीतिक दृष्टि से विकसित करने का यत्न किया वहीं वाजपेयी जी ने गुलामी की मानसिकता से ग्रस्त भारतीयों में आत्मगौरव, स्वाभिमान पूर्वक अपने राष्ट्र को प्राथमिक दर्जा देने के लिए प्रोत्साहित किया तथा उन्होंने अपने भाषणों व विभिन्न कार्ययोजनाओं के द्वारा देश को गति प्रदान की ।

नेहरू युग जहाँ धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, यूरोपीय प्रभाव में जी रहा था तो देश को राष्ट्रवाद का पाठ वाजपेयी युग में पढ़ने को मिला। वैचारिक दृष्टिकोण भले ही दोनों के एक दूसरे से भिन्न थे, परंतु वैज्ञानिक दृष्टि, आर्थिक नीतियाँ दोनो ही युगों में साम्य थीं। यद्यपि विदेश नीति में नेहरूयुग की विदेश नीति सोवियत संघ की ओर झुकाव वाली प्रतीत होती दिखाई देती है, साथ ही गुटनिरपेक्ष नीति, पंचशील समझौता नेहरू युग की विशेषता थी, जबकि गुटनिरपेक्ष आंदोलन के साथ-साथ वैश्विक महाशक्तियों के साथ संतुलित संवाद, लाहौर बस यात्रा, परमाणु नीति आदि प्रमुख वाजपेयी युग की विशेषताएँ थीं।

नेहरू ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर एक स्वतंत्र और निष्पक्ष राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। इसके विपरीत वाजपेयी युग 21वी सदी के द्वार खोलने वाला, वैश्विक संभावनाओं और तकनीकी से परिपूर्ण युग था। अटल बिहारी ने गठबंधन की राजनीति को सफलता पूर्वक संचालित करते हुए लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना की, जिससे सहमति तथा संवाद की संस्कृति को प्रोत्साहन मिला। भाषाई दृष्टि से जहाँ नेहरू का झुकाव अंग्रेजी की तरफ

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

था, तो वाजपेयी का झुकाव हिंदी के साथ–साथ अन्य सभी भारतीय भाषाओं के प्रति भी था और हिंदी को तो उन्होंने वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठा दिलाई जिससे यह प्रमाणित हुआ कि हिंदी में भी वैश्विक संवाद कौशल की प्रतिभा है।

बीज शब्द:– गुटनिरपेक्ष, मिश्रित अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, धर्मनिरपेक्ष, उदारीकरण, गठबंधन युग

शोध उद्देश्य:–

- नेहरू युग एवं वाजपेयी युग की राजनीतिक विचारधाराओं का विश्लेषण करना।
- वाजपेयी व नेहरू युग की आर्थिक नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- दोनों युगों की विदेशनीतियों का विश्लेषण करना।
- सांस्कृतिक व सामाजिक दृष्टिकोण से दोनों युग की नीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
- नेहरू युग और वाजपेयी युग की लोकतांत्रिक शासनप्रणाली का समीक्षात्मक अध्ययन ।
- नेहरू व वाजपेयी की ऐतिहासिक विरासत को समझना और इसकी वर्तमान प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

प्रस्तावनाः– स्वतंत्र भारत के निर्माण में योगदान करने वाले अनेक शिल्पियों में जवाहरलाल नेहरू और अटल बिहारी वाजपेयी मुख्य शिल्पी थे, जिन्होंने अपनी नीतियों से राष्ट्र के विकास को धार दी। एक तरफ नेहरू ने नवस्वतंत्र राष्ट्र को राजनैतिक, आर्थिक रूप से स्थायित्व प्रदान किया तो दूसरी तरफ वाजपेयी जी ने भारतीयों को गुलामी की मानसिकता से बाहर निकाला और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के संवाहक के रूप में हिंदी, हिंदू, हिन्दूस्तान पर गौरवाभिमान करने की प्रेरणा दी और साथ ही आत्मविश्वास जाग्रत किया। नेहरू ने जिन परिस्थितियों में देश की कमान सँभाली वह निश्चित रूप से भयावह परिस्थितियाँ थीं, इसके बावजूद उन्होंने दृढ़ता और संयम के साथ देश का सफलतम नेतृत्व किया और भारत को विकास की पटरी पर लाने की पूरी कोशिश की। वहीं वाजपेयी जी का युग राजनैतिक अनिश्चितता का काल था। जिसमें किसी भी राजनैतिक दल को पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं हो रहा था। तत्कालीन राजनैतिक अस्थिरता के दौर में

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

वाजपेयी जी ने गठबंधन की सरकार को न केवल सफलतापूर्वक चलाया बल्कि भारत के हित में कठोर निर्णय करके परमाणु परीक्षण कर देश को परमाणु शक्ति सम्पन्न भी बनाया। अटल युग भारतीय राजनीतिक इतिहास में राष्ट्रीय आत्मबोध, भारतबोध, अर्थव्यवस्था, वैदेशिक नीति में एक नवीन चरण की शुरूआत लेकर आया।

नेहरू युग की विशेषताएँ (1947-1964 ई.)

राजनीतिक विचारधारा और दृष्टिकोणः- पं. जवाहरलाल नेहरू धर्मनिरपेक्ष, गुटनिरपेक्ष, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आधुनिकता के प्रबल समर्थक थे। उनका मूल वैचारिक दृष्टिकोण कानून का शासन, सामाजिक समरसता, अहिंसा, जनवाद, व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा सम्मान आदि पर आधारित राजनीति पर टिका था। स्वतंत्रता संघर्ष की पवित्र परंपरा को नेहरू ने न केवल आगे बढ़ाया बल्कि नवस्वतंत्र भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था को पाल-पोसकर उसकी मजबूत नींव रखी। उनका जनवाद तथा नागरिक अधिकारों के प्रति गहरा लगाव था। यह उनके द्वारा की गई इस घोषणा से स्पष्ट हो जाता है। ''मैं किसी भी कीमत पर जनवादी प्रणाली को नहीं छोड़ूँगा।''[1] भारत जैसे वैविध्यपूर्ण समाज में लोकतंत्र अत्यधिक आवश्यक है, क्यों कि विविधतापूर्ण समाज को एकजुट रखने के लिए किसी शक्ति और दबाव की नहीं बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत कोई भी व्यवस्था भारत के विखंडन का कारण हो सकती थी इसलिए नेहरू ने जनवादी व्यवस्था का प्रबल समर्थन किया।

नेहरू ने समाजवादी दृष्टिकोण को अपनाया। उनके अनुसार समाजवाद का तात्पर्य अवसर की समता, सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक तकनीक से दोहन की गई संपत्ति का समान वितरण तथा पूँजीवाद और सामंतवाद द्वारा पैदा की गई आर्थिक असमानता का अंत तथा समाजिक समस्या के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण का पालन आदि था। धर्मनिरपेक्षता के प्रति नेहरू के विचार स्पष्ट थे। उनका मानना था कि राज्य, राजनीति तथा शिक्षा को धर्म से अलग रखना चाहिए तथा धर्म को व्यक्तिगत मामला मानकर सभी धर्मो के प्रति समान आदरभाव दिखाना चाहिए। भारत जैसे बहुधर्मी समाज वाले देश में राष्ट्रीय एकता सिर्फ धर्मनिरपेक्षता के आधार पर ही हो सकती है।[2] ऐसा जवाहर लाल नेहरू का दृढ़ विश्वास था।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

आर्थिक नीति और विकास मॉडल :- पंडित नेहरू ने पूँजीवादी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य और उसकी विकास से संबंधित अवधारणा को अस्वीकृत कर दिया था, क्यों कि वे मार्क्सवाद से प्रभावित थे। उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था के आर्थिक मॉडल को अपनाया जिसमें समाजवाद और पूँजीवादी दोनों का मिला-जुला रूप अपनाया। नेहरू ने स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय गरीबी के उन्मूलन तथा राज्य में कल्याणकारी नीतियों को लागू करने के लिए तीव्र आर्थिक विकास को ही आधार मानते थे। चूँकि आजादी सदैव आर्थिक शक्ति तथा राजनैतिक वर्चस्व के प्रतिरोध करने की क्षमता पर निर्भर करती है, इसलिए जवाहरलाल सर्वप्रथम एक स्वतंत्र व आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध, शरणार्थी समस्या, भारत विभाजन, नवस्तंत्र भारत की गंभीर आर्थिक स्थिति को देखकर पं. नहेरू ने योजनाबद्ध आर्थिक प्रगति की आवश्यकता महसूस की और सन् 1950 ई. में योजना आयोग की नियुक्ति की तथा पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण आरंभ हुआ।[3] मिश्रित अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र का वर्चस्व स्थापित हुआ तथा निजी क्षेत्र की भागीदारी को सीमित स्वतंत्रता ही दी गई। एक तरफ इस मॉडल ने भारत को आर्थिक संवृद्धि की ओर ले जाने का प्रयास किया। वहीं दूसरी तरफ इस मॉडल में कई व्यावहारिक चुनौतियाँ थीं, जिसमें लाइसेंसराज, कृषि की उपेक्षा, जिसके कारण 1960 के दशक में खाद्यान्न संकट उत्पन्न हुआ तथा इस मॉडल ने ग्रामीण भारत जिसमें 70% से अधिक जनसंख्या निवास करती थी, की उपेक्षा की गई।

वैज्ञानिक सोचः- 'विज्ञान इस युग की मूल भावना है और आधुनिक दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण कारक है।'[4] पं. नेहरू अपने छात्र जीवन से ही आधुनिक विज्ञान के चमत्कारों से आश्चर्यचकित थे। इसलिए वे चाहते थे कि अविकसित भारत की आर्थिक प्रगति का मूल आधार वैज्ञानिक सोच पर आधारित नीतियाँ होनी चाहिए। स्वतंत्रता के समय वैज्ञानिक शोधकार्य पर महज 0.1% कुल जी.डी.पी. का व्यय किया जाता था। वैज्ञानिक और औद्योगिक शोध परिषद के अधीन लगभग दो दर्जन स्वतंत्र वैज्ञानिक शोध संस्थानों की स्थापना की गई।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री होमी जहाँगीर भाभा के सहयोग से मुम्बई में टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च की स्थापना की गई। इसमें भारत का पहला निर्मित कम्प्यूटर रख गया था। दूसरा परमाण ऊर्जा आयोग, जिसका कार्य भारत के परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण तथा संचालन करना था। नेहरू युग में ही आई.आई.टी.,आई.आई.एम. जैसी प्रमुख राष्ट्रीय स्तर के शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना भी की गई। जवाहरलाल नेहरू तथा भाभा दोनों का मानना था कि वैज्ञानिक तकनीक तथा उपकरणों के लिये पश्चिमी देशों पर निर्भरता कम से कम की जाये। क्यों कि उनका मानना यह था, कि यदि कोई उपकरण आयात किया जाता है, तो केवल उपकरण ही प्राप्त होता है जबकि यदि उसे स्वयं बना लिया जाये तो उपकरण तो प्राप्त होगा ही साथ ही उस उपकरण को निर्मित करने की विशेषज्ञता भी हासिल हो जाएगी।

गाँधी जी के स्वप्नों के भारत में कुटीर उद्योग को बढ़ावा देने की बजाय नेहरू ने यंत्रीकरण को बढ़ावा दिया और भारी उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहित किया । बड़े-बड़े बाँधों का निर्माण, इसरो, सिंचाई परियोजना, पंचवर्षीय योजनाओं की शुरूआत नेहरू युग की ही देन है । उन्होनें भारत के भविष्य को बुद्धि, तर्क और विज्ञान की रोशनी में गढ़ने का प्रयास किया परंतु उनके द्वारा विज्ञान की संस्थागत संरचना आम जनता तक नहीं पहुँच सकी और विज्ञान की आड़ में परम्परागत कृषि ज्ञान की उपेक्षा की गई।

विदेश नीतिः- पं. नेहरू की विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता, पंचशील समझौता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, आदर्शवाद और तटस्थता के मूल सिद्धांत पर आधारित थी। गुटनिरपेक्षता की प्रारंभिक झलक लिखे गए उस पत्र से मिलती है, जो उन्होंने सन् 1947 में के.पी.एस. मेनन को लिखा था। 'हमारी सामान्य नीति यही है, कि हम किसी भी तरह के वर्चस्व की राजनीति में न फँसें। हम किसी भी समूह में दूसरे समूह के विरोध में शामिल न हो। दुनिया में वर्तमान में दो ताकतवर समूह हैं। एक रूसी समूह है, तो दूसरा आंग्ल-अमेरिकी। हमें दोनों के साथ मैत्री संबंध रखना है और किसी भी समूह में शामिल नहीं होना है। अमेरिका और रूस दोनों ही असामान्य रूप से एक-दूसरे के प्रति और अन्य

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

देशों के प्रति शंकालु दृष्टि है। इससे हमारी राह आसान नहीं होगी, क्योकि जब भी हम किसी देश की तरफ थोड़ा सा भी झुकाव प्रदर्शित करेगें तो दूसरा हमें शक की निगाह से देखेगा। ऐसा नहीं होना चाहिए।'[5]

पं. नेहरू की गुटनिरपेक्ष नीति तत्कालीन समय की आवश्यकता थी जिसका अर्थ किसी एक खेमे में शामिल होना नहीं था किंतु आवश्यक मुद्दे पर अपनी प्रतिक्रिया देना भारत की नीति का प्रमुख हिस्सा था। गुटनिरपेक्ष नीति का पालन करते हुए भी नेहरू का झुकाव सोवियत संघ की ओर ही था, जो उनकी अपनाईं गईं आर्थिक गतिविधियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। चीन के साथ 1954 में पंचशील समझौता कर हिंदी-चीनी भाई-भाई का नारा बुलंद किया परंतु 1962 में चीन के आक्रमण ने नेहरू के इस समझौते की कलई खोल दी। चीन पर अत्यधिक विश्वास नेहरू के लिय घातक सिद्ध हुआ। यह उनकी विदेश नीति की अविश्वनीयता पर प्रश्नचिन्ह था। उन्होंने चीन की कूटनीतिक चालों तथा सामरिक महत्वकांक्षाओं को ठीक से नहीं समझा। जिसके गंभीर दुष्परिणाम भारी सैन्य क्षति के रूप् में भारत को भुगतने पड़े।

नवस्वतंत्र राष्ट्रों से संबंध बनाने की दृष्टि से मार्च 1947, नई दिल्ली में एशियन रिलेशन कॉन्फ्रेस का आयोजन एक उल्लेखनीय प्रयास था, जिसमें 28 देशों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए। इसके अतिरिक्त दक्षिणपूर्व एशियाई देश जो तत्कालीन समय में पराधीन थे,के प्रतिनिधि भी इस सम्मेलन का हिस्सा बने साथ ही सोवियत संघ के सात गणराज्य, कोरिया, अरब लीग, फिलीस्तीन का यहूदी प्रतिनिधि मंडल इस आयोजन में शामिल हुए और अफ्रीकी-एशियाई एकता की वकालत बाडुंग सम्मेलन में जवाहरलाल ने जोर-शोर से की थी।

अटल बिहारी वाजपेयी की विशेषताए:- वाजपेयी के समय में लोकतंत्र एक ऐसे कठिन दौर से गुजर रहा था, जब किसी भी राष्ट्रीय दल को पूर्ण बहुमत नहीं मिल रहा था और गठबंधन की राजनीति विचारधारा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पृष्ठभूमि की थी। वे बाल्यकाल से ही संघ की शाखा में जाने लगे थे इसलिए उनके राजनीतिक विचारों का निर्माण संघ की शाखा में हुआ। वाजपेयी जी का जन्म संयुक्त परंपरावादी परिवार में हुआ

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

था। जहाँ भारतीय संस्कार उन्हें अपने परिवार से प्राप्त हुए। यही कारण था कि वाजपेयी जी की विचारधारा समन्वयवादी राष्ट्रवाद की थी। वे भारत के विभाजन को कतई स्वीकार करने वालों में से नहीं थे। उन्होंने तो यह संकल्प किया था, कि एक दिन भारत-पाकिस्तान को पुनः एक करेगें।

उनकी राजनैतिक शिक्षा डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के निजसचिव रहने के दौरान हुई जो 'एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेगें' का नारा बुलंद कर रहे थे। वाजपेयी जी का राजनीतिक चिंतन भारतीय संस्कृति, लोकतंत्र, राष्ट्रवाद और सामाजिक समरसता की गहराई से जुड़ा हुआ था। वाजपेयी जी का राष्ट्रवाद ,सांस्कृतिक राष्ट्रवाद था, जिसमें वे भारत को केवल भौगोलिक भूखण्ड नहीं बल्कि एक जीता-जागता राष्ट्रपुरूष मानते थे। वे स्वयं कहते थे कि ''मुझे अपने हिन्दुत्व पर अभिमान है, किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि मैं मुस्लिम-विरोधी हूँ।''[6] उनकी रीति-नीति व राजनीतिक दृष्टि स्पष्ट व साफ-स्वच्छ थी।

अटल जी की राजनीति सहमति और संवाद पर आधारित थी। साधारण जीवन जीने वाले अटल उच्च विचारों की प्रतिमूर्ति थे। वे राजनीति में अजातशत्रु थे । उनमें राष्ट्रभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनके शब्दों में ''हम जिएँगें देश के लिए,मरेगें तो देश के लिए । इस पावन धरती का कंकर-कंकर शंकर है, बिंदु-बिंदु गंगाजल है । भारत के लिए मैं हँसते-हँसते प्राण न्यौछावर करने में गौरव और गर्व का अनुभव करूँगा।[7]

नेहरू बनाम वाजपेयी राजनीतिक दृष्टिकोण की तुलना:-

विषय	नेहरू युग	वाजपेयी युग
विचारधारा	धर्मनिरपेक्ष,समाजवादी	समन्वयवादी, राष्ट्रवाद
राजनैतिक संरचना	एक दलीय वर्चस्व (कॉंग्रेस)	बहुदलीय गठबंधन(एन.डी.ए.)
संवाद की शैली	वैचारिक गहराई,बहस की संस्कृति	सहमति का प्रयास,व्यवहारिक संवाद

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

लोकतंत्र में योगदान	लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना	लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना, गठबंधन की परिपक्वता

वाजपेयी युग की आर्थिक गतिविधियाँ:– 'अर्थव्यवस्था और व्यापार का सबसे बड़ा शत्रु गंदी राजनीति होती है। इसके विपरीत सुशासन, अर्थव्यवस्था और व्यापार का सर्वोत्तम मित्र होता है।'[8] देश को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए व्यापार एवं आर्थिक गतिविधियों के लिए सुशासन की स्थापना तथा गंदी राजनीति से परे जाकर अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध करवाना वाजपेयी जी की आर्थिक विचार के प्रति सजगता का द्योतक है। इसलिए वाजपेयी ने अपने शासन काल में व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ें, इसके लिए सुशासन स्थापित हो यह सुनिश्चित किया। साथ ही अनुकूल, सस्ते परिवहन व संचार के लिये बड़े–बड़े महानगरों को जोड़ने के लिए राजमार्गों का निर्माण करवाया। ग्रामीण क्षेत्र के लोग अपना उत्पाद शहरों तक सरलतापूर्वक भेज सकें, इसके लिए प्रधामंत्री ग्राम सड़क योजना जैसी क्रांतिकारी योजना लेकर आए। जिसने ग्रामीणों को भी भारतीय समृद्धि में अंशदान करने का हिस्सेदार बनाया। इससे न केवल अर्थव्यवस्था मजबूत हुई बल्कि ग्रामीण भारत में भी आर्थिक सम्पन्नता आई। जिससे उनका जीवनस्तर पहले की अपेक्षा उच्चस्तरीय हो गया था।

अर्थव्यवस्था में स्वदेशी, लघु उद्योगों तथा कुटीर उद्योगों को वाजपेयी जी महत्वपूर्ण मानते थे। उनके अनुसार स्वदेशी का अर्थ यह नहीं था कि हम कूपमंडूक बने रहें। नई दुनिया छोटा सा गाँव बन गया है। हम इस खुली अर्थव्यवस्था में भी अपनी आंतरिक शक्ति के आधार पर डटकर खड़े रह सकते हैं और ऐसा हमारा विश्वास है।[9] वाजपेयी द्वारा छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन देने का कारण था, कि छोटे–छोटे उद्योग, भारी उद्योगों की अपेक्षा अधिक रोजगारों का सृजन करते हैं। इसलिये उन्होंने बड़े उद्योग घरानों से अपील की थी, कि छोटे क्षेत्रों के उद्योग को मध्यम व निम्नवर्ग के व्यापारी के लिए छोड़ देना चाहिए, जिससे कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन मिल सके।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

आर्थिक नीतियों की तुलनात्मक व्याख्याः-

विषय	नेहरू युग	वाजपेयी युग
आर्थिक मॉडल	समाजवादी, योजना आधारित	उदारीकरण, बाजारोन्मुखी
प्रमुख योजनाएँ	पंचवर्षीय योजनाएँ, सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार	स्वर्णिम चतुर्भज, विनिवेश, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना
उद्योग नीति	राज्य-नियंत्रित भारी उद्योग	छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन, निजीकरण, प्रतिस्पर्धी बाजार
तकनीक	वैज्ञानिक अनुसंधान पर जोर	आई.टी. , संचार, डिजिटल, इन्फ्रास्ट्रक्चर
वैश्विक व्यापार	आयात निर्भरता	निर्यात अधारित नीति,वैश्वीकरण

अटल युग की वैज्ञानिक दृष्टिः- वाजपेयी विज्ञान को राष्ट्रनिर्माण का उपकरण मानते थे। उनका मानना था कि विज्ञान केवल प्रयोगशाला तक सीमित न रहे बल्कि इस तकनीक का लाभ, गरीब, पिछड़ेपन और बेरोजगारी को समाप्त करने के साथ-साथ कृषि में सुधार तथा राष्ट्र को मजबूती प्रदान करने में होना चाहिए। वाजपेयी जी भारत की प्राचीन वैदिक परंपरा, संघ परंपरा से संस्कारित थे। इसके बावजूद आधुनिक विज्ञान के प्रबल समर्थक थे। वाजपेयी युग दूर संचार क्रांति का युग था।

वैज्ञानिक दृष्टि के बिना राष्ट्र की रक्षा, सुरक्षा को मजबूती नहीं दी जा सकती यह वाजपेयी जी भलीभाँति जानते थे इसलिए उन्होंने भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए पोखरण में परमाणु परीक्षण कराने का कठोर निर्णय किया और इसके सफल परीक्षण के पश्चात सम्पूर्ण सफलता का श्रेय स्वयं के बजाय वैज्ञानिकों को दिया और उनका अभिनंदन किया तथा इस परीक्षण के बाद उन्होंने 'जय जवान,जय किसान,जय विज्ञान'[10] का नारा दिया। अटल जी का यह नारा उनकी विज्ञान और वैज्ञानिक मनोवृत्ति को अपने राष्ट्रीय जीवन तथा अपनी संस्कृति का अभिन्न अंग मानने का परिचायक है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

वाजपेयी युग की विदेश नीतिः– वाजपेयी युग की विदेशनीति में आत्मगौरव व स्वाभिमान का युग था। अटल जी जब पहली बार जनतापार्टी की सरकार में विदेशमंत्री बने तो उन्होंने संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा में 04 अक्टूबर,1977 को हिंदी में भाषण देकर एक नवीन परंपरा की नींव डाली। जिसका सरल संदेश था कि हिंदी में भाषण देना अपमान नहीं बल्कि सम्मान व प्रतिष्ठा का विषय है। उनकी नीति व्यावहारिक यथार्थवादी कूटनीति पर आधारित थी। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए पड़ोसियों के साथ भी संवाद स्थापित करने का असफल प्रयास किया।

अटल जी की लाहौर बस यात्रा एक ऐतिहासिक यात्रा थी, जिसमें उन्होंने कहा कि ''अब भारत पाकिस्तान को केवल हॉकी के मैदान में ही हराएगा।''[11] उनकी विदेश नीति 'वसुधैव कुटुम्बकम' की संकल्पना पर आधारित थी। उन्होंने सदैव युद्ध के स्थान पर बुद्ध को प्राथमिकता दी किंतु जब पड़ोसी राष्ट्र द्वारा युद्ध थोपा गया तो उन्होंने इसका बड़ी सफलतापूर्वक दृढ़ता के साथ करारा प्रतिउत्तर दिया। संवाद, समन्वय की संतुलित नीति वाजपेयी की विदेशनीति का आधार था।

विदेश नीति की तुलनात्मक व्याख्याः–

विषय	नेहरू युग	वाजपेयी युग
दृष्टिकोण	आदर्शवाद, नैतिक नेतृत्व	यथार्थवाद, राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता
पाक नीति	सीमित संवाद	संवाद व संघर्ष की संतुलित नीति
चीन नीति	पंचशील, विश्वासघात	सतर्कता , संवाद, संतुलन
अमेरिकी नीति	दूरी, संदेह	रणनीतिक साझेदारी
प्रमुख पहल	गुटनिरपेक्ष आंदोलन	पोखरण परीक्षण, लाहौर बस यात्रा, यू.एन.ओ. में हिंदी में भाषण

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

निष्कर्षः–

भारतीय लोकतंत्र में नेहरू व वाजपेयी युग दो महत्वपूर्ण चरण हैं, जिन्होंने अपने वैचारिक दृष्टि, संवादशैली, वैज्ञानिक सोच, प्रशासनिक नीतियों और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में भिन्न होते हुए भी भारत के विकास, समृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया।

1) नेहरू ने नवस्वतंत्र राष्ट्र को मिश्रित अर्थव्यवस्था, समाजवादी विचार से प्रभावित पंचवर्षीय योजनाएँ दी और इससे एक आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष व समाजवादी राष्ट्र की परिकल्पना की ।
2) जबकि वाजपेयीयुग उदारवादी बाजार को गति देने वाला तथा आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाने का युग था आर्थिक समृद्धि हेतु वाजपेयी ने ग्रामीण भारत की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया और इसके लिये प्रधामंत्री ग्राम सड़क योजना प्रारंभ की ।
3) नेहरू का व्यक्तित्व, जीवनशैली, संवाद का ढंग उनकी नीतियों पर पश्चिम तथा सोवियत संघ की विचारधारा का प्रभाव था जबकि वाजपेयी जी का व्यक्तित्व भारतीय संस्कृति की जड़ों से पोषित था। उनका व्यक्तित्व, पहनावा, संवादशैली में राष्ट्रवाद तथा भारतीय ज्ञान परंपरा का पुट स्पष्ट झलकता था।
4) नेहरू ने देश को विकट परिस्थितियों से बाहर निकाला तो वाजपेयी जी ने देश को औपनिवेशिक की गुलामी मानसिकता से बाहर निकाला तथा भारतीय होने पर गौरव करने की प्रेरणा प्रदान की।
5) नेहरू युग भारत को विषम परिस्थितियों से बाहर निकालने के साथ–साथ कई अनसुलझी समस्याओं को उत्पन्न करने का भी युग था कश्मीर समस्या, चीन (1962) आक्रमण आदि विवादस्पद समस्याएँ प्रमुख हैं, जबकि वाजपेयी युग समस्याओं के स्थान पर समाधान का युग था।

आधुनिक भारत की यात्रा इन दोनों युगों के संयुक्त योगदान का परिणाम है नेहरू ने नींव रखी, वाजपेयी ने उस पर आत्मगौरव और वैश्विक दृष्टिकोण की इमारत खड़ी की।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
July- August: 2025

आज का भारत नेहरू की कल्पना और वाजपेयी की कार्यकुशलता का समन्वित परिणाम है।

संदर्भः-

1. चन्द्र, विपिन, मुखर्जी, मृदुला, मुखर्जी, आदित्य, (2015), आजादी के बाद का भारत, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृष्ठ क्रमांक-237
2. चन्द्र, विपिन, मुखर्जी, मृदुला, मुखर्जी, आदित्य, (2015), उपर्युक्त पृष्ठ क्रमांक-244
3. शर्मा, एल.पी. (2019), आधुनिक भारत, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, पृष्ठ क्रमांक-647
4. गुहा, रामचन्द्र, (2012), भारत गाधी के बाद, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक-269
5. गुहा, रामचन्द्र, (2012), उपर्युक्त, पृष्ठ क्रमांक-189-190
6. वाजपेयी, अटलबिहारी, शर्मा, चन्द्रिका प्रसाद (संपादक), (2016), बिंदु -बिंदु विचार, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक-102
7. पोखरियाल, रमेश, (2019), युगपुरूष भारतरत्न अटलजी, डायमंडबुक्स, नईदिल्ली, पृष्ठ क्रमांक-25
8. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी चुने हुए भाषण, खंड-प्प्ए (2000), प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक-50
9. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी चुने हुए भाषण, उपर्युक्त, पृष्ठ क्रमांक-57
10. शर्मा, चन्द्रिका प्रसाद, (2020), शक्ति से शांति, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक -64
11. रश्मि, (2019), अटल जीवन गाथा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक-153